PRINCIPAL
Govt. College of Arts & Science
Aurangabad

Peer Reviewed Referred and
UGC Listed Journal
(Journal No. 40776)

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

ISSN 2277-5730

AJANTA

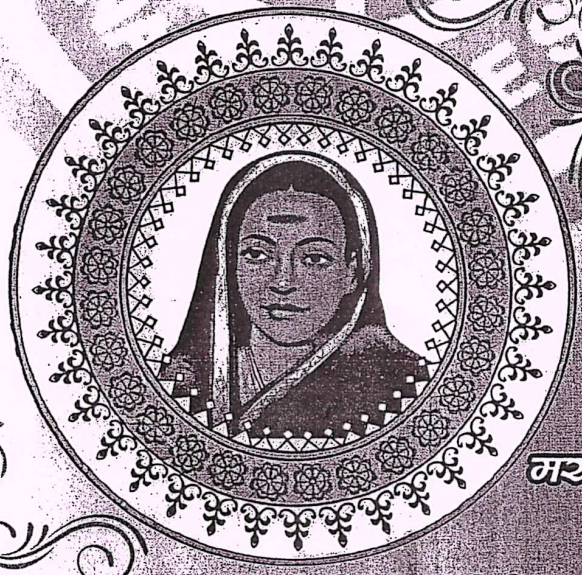

मराठी भाग - 9 / हिंदी

भारतातली पहिली महिला शिक्षिका

"सावित्रीबाई फुले"

Special Issue
"WOMEN EMPOWERMENT"

VOLUME - VII, ISSUE - I
JANUARY - MARCH - 2018
IMPACT FACTOR / INDEXING
2017 - 5.2 www.sjifactor.com

VOLUME - VII, ISSUE - I - JANUARY-MARCH - 2018
AJANTA- ISSN 2277-5730 - IMPACT FACTOR - 5.2 (www.sjifactor.com)

हिंदी अणुक्रमणिका

अ.क्र.	लेख आणि लेखकाचे नाव	पृष्ठ क्र.
१	सुधा अरोडा की कहानियों ने महिला जागरुकता **प्रा. डॉ. कुसूम राणा**	१-३
२	संगीत और महिला सक्षमीकरण **डॉ. वैशाली देशमुख**	४-६
३	सामाजिक जीवन के परिपक्ष्य में बदलते महिलांओ का योगदान **प्रा. डॉ. शेख मदीना सिकंदर**	७-१०
४	महिला सशक्तिकरण एवं उसके अधिकार **डॉ. राठोड सुनिता भिमराव**	११-१५
५	भारतीय उच्च शिक्षा में लैंगिक अंतर : राष्ट्र निर्माण में इसका प्रभाव **डॉ. श्रीमती एस. पी. गोडबोले**	१६-२०

Govt. College of Arts & Science Aurangabad

PRINCIPAL
Govt. College of Arts & Science
Aurangabad

VOLUME - VII, ISSUE - I - JANUARY - MARCH - 2018
AJANTA - ISSN 2277 - 5730 - IMPACT FACTOR - 5.2 (www.sjifactor.com)

२. संगीत और महिला सक्षमीकरण

डॉ. वैशाली देशमुख
विभाग प्रमुख संगीत विभाग, शा.ज्ञा.वि.म., औरंगाबाद.

संगीत विश्व की भाषा मानी जाती है । और विश्व के कणकण मे संगीत स्थित है । यही कारण है की संगीत की भाषा पशु-पक्षी तथा जानवरों से लेकर सभी जीव जंतूओपर असरदार पाई जाती है । संपूर्ण सृष्टी का चैतन्य जो अखंण्ड अव्दितीय ,आनंदमय है इसका कारण संपूर्ण सृष्टी नादाधिष्ठ है । सबका आधार केंद्र बिन्दू नाद है । 'नादंधिनम्तोजगत् ' अर्थात नाद चराचर में सर्वज्ञ सर्वकाल में व्याप्त है ।

नारी सृष्टी की आधारषिला है । प्रकृती को संस्कृती का स्वरूप देने में और विकृतियों से बचानें में नारीयोंका योगदान इतिहास का अवलोकन करते समय सामने आता है । सांगेतिक धारिणी पर यदि नारी की भूमिका का मुल्यांकन करे तों यह समय आता है की संगीततज्ञों के अनूसार शक्ती का स्वरूप पार्वती और गीत अथवा वादन की सरस्वती प्रवर्तिका रही है । वीणा धारीणी सरस्वती देवी की संगीत की अधिष्ठात्री के रूप में अर्चना की जाती है ।

द्रविड एवम् सिंधु सभ्यता में महिलायें नृत्य किया करती थी । वैदिक युग में नर-नारी के सामूहीक नृत्य के उल्लेख मिलते है । स्त्रियोंके ६४ कलाओंमें संगीत कला को स्थान विशेष रूप सें है । महिलाओव्दारा किया गया लोकनृत्य यज्ञादि समारोह पर संपन्न होता था ।सनातन काल सें ही नारी समन एवं यज्ञोत्सव को जाती थी । वैदिक युग में स्त्रियों को ऋग्वेदो के गायन में समाविष्ठ किया जाता था । वैदिक काल में गार्गी, मैत्रेयी, लोपामूद्र, (यह केवल उत्कृष्ट वक्ता नही थी अपितू वे संगीत निपूण थी । रामायण और महाभारत काल में यशोदा ने बालकृष्ण आर कौसल्या ने राम को पालने झूलाते हुए लोरियाँ गायी है । रामायण काल मे अप्सराओं में धृताची मेनका,रंभा, मिश्रकेषी,अलम्वुसा, संगीतकला में निपूण थी । रावण की पत्नी मंदोदरी उत्तम संगीततज्ञ थी । अर्जून व्दारा उत्तरा को संगीत नृत्य की शिक्षा देने का उल्लेख मिलता है । जनपद काल में बौध्द और जैन कालीन समाज में संपन्न परिवारों की महिलायें संगीतादि कलाओं में सिध्द हस्त होती थी । मौर्य काल से लेकर हर्षवर्धन काल में महिलायें संगीत में निपुण होती थी । मुगलकाल में नूरजहाँ,मुमताज,चाँदबीबी,रजिया सुल्तान,जेबुनिंसा आदी के नाम सामने आते है । इसी कालमें राजदरबार में संगीत शिक्षा लेनेवाली राजगायिकाओं के लिये सदारंग ने ख्याल गायकी का दालन खुला कीया।

PRINCIPAL
Govt. College of Arts & Science
Aurangabad

अकबर काल में गायिकाएँ दफजन कहलाती थी । नवाब दरगाह कुलीखाँ के गायिकाओं मे नुरबाई,चमनी,सरस,रूपा, चकमक,जीनत,रहमानबाई और कूँवर संगीततज्ञ थी ।

उन्नीसवी सदी में संगीत को बढावा देने के लिये पं.वि.दि.पलूस्कर जिन्होने "गांधर्व महाविद्यालय" की शुरूवात १९०१ में लाहोर में की । और यही एक माध्यम महिलाओं को संगीत शिक्षा प्राप्त करनें में महत्वपूर्ण रहा है ।

इ.स.पूर्व पाचवे शतक में भरतमूनी कें नाट्यशास्त्र मे अष्टनायिकाओं का उल्लेख मिलता है । उनमे वासकसज्जा नायिका विरहोत्कंक्षिता नायिका, स्वाधीनमर्तृका नायिका, कलहांतरिता नायिका, खंडिता नायिका, विप्रलब्धा नायिका, प्रोषितभृर्तका नायिका, अभिसारिका नायिका , इत्यादि वर्णन मिलता है। प्रोषितभृर्तका नायिका का वर्णन पं.भरतमुनीने इस प्रकार किया हुआ दिखाई देता है ।की ये नायिका अपनें पति के विरहयोग में गायन करे और उस गायन मे पति के नाम का उल्लेख अनेकबार होना चाहीये ।

अनेक शतकोकें इतिहासके अवलोकन के उपरान्त यह उल्लेख मिलते है की, प्राचिन काल की गणिकायें, नायिकायें उपजीविका करने हेतू गायनविधी का अवलंब करती थी । बादमे यही गणिकायें देवदासीयों के रूप में मंदिरो में गायन विद्या प्रयुक्त कर अध्यात्मा की ओर अपना जीवन व्यतीत करती थी ।संगीत एक ऐसा माध्यम है जिसका उपयोग जीवन के हर मोड पर महिलाओं ने किया हुआ दिखाई देता है ।

मुघलकाल में स्त्रियों को खुलेआम निकलने में बंदी थी । स्त्रिया बंदिस्त हो गयी थी और इसका परिणाम भारतीय संगीत पर हुआ था । इसकाल गुरू अपनी तालीम सिर्फ रिश्तेदारोंको ही दिया करता था । महिलाये उस काल मे संगीत छुपछुप के सुनकर आत्मसात किया करती थी । इन महान महीलाओंने संगीत का संक्रमण अपने गायन से करते हुए संगीत विकसीत कीया ।

उन्नीसवी सदी में स्त्रियों को संगीत सीखने मे सामाजिक जीवन में सहजता प्राप्त हूई । किन्तू सामाजिक जीवन में संगीत का स्थान नीचा माना जाता था । उस काल में किराणा घरानेकी प्रसिद्ध गायिका हिराबाई बडोदेकर ने टिकट लगाकर अपना मंचगान किया हूआ है । उस काल की सभी गायिकायें संगीत की माध्यम से उदरनिर्वाह करती थी । उनमें से सुश्री केसरबाई केरकर, सुश्री मोगूबाई कुर्डीकर, इ.स. १८६८ की जोहराबाई आगरेवाली इ.स.१९१३ की गंगुबाई हनगल, इ.स १९१६ की सुनिति मुटाटकर इन सभी गायिकाओंने उदरनिर्वाह के लिये संगीत को ही अपनाया था । इन गायकाओंने उस समय देश-विदेश में अपने कार्यक्रम प्रस्तुत कर अपने देश का नाम रोशन कीया था । २०वी सदी की गान सरस्वती किशोरी अमोणकर जिन्होने तो संगीत को एक ऐसे शिखर पर पहुँचायाँ है की उस संगीत का सफर करते है तो यह जिंदगी कम पड जायेगी ।

PRINCIPAL
Govt. College of Arts & Science
Aurangabad

स्वतंत्रता प्राप्ती के बाद भारत में स्त्रियों के जीवन में तेजी से परिवर्तन आया है । अनेक महिला कलाकारोंने संगीत संस्था की स्थापना की है । संगीत क्षेत्र में गुरूकुल शिक्षण पध्दती शिक्षा प्राप्ती का महत्वपूर्ण माध्यम है । इसीलिए अनेक महिलाओंने इस पध्दती का अवलंब कर अपने गुरूकुल से अनेक विद्यार्थीयो को शिक्षा देने का बडा महत्वपूर्ण कार्य किया है । गान सरस्वती किशोरी अमोणकर जिन्होने 'स्वरार्थरमणी ' यह राग रस सिध्दांतपर आधारीत ग्रंथ की रचना की । डॉ प्रभा अत्रे ने 'स्वरमयी,सुस्वराली,स्वरांगीणी, स्वरंजनी, अंतःस्वर, एनलायटींग दि लिसनर आदि ग्रंथों की रचना की है । आशा खाडीलकर जीने 'उत्तुंगसा सांस्कृतीक परिवार' नामक संस्था स्थापीत की । डॉ. प्रभा अत्रे 'गानवर्धन संगीत संस्था ' की संस्थापक अध्यक्षा है । भारतरत्न लता मंगेशकर जी को पूरे जगत मे कोई जानता नही ऐसा हो नही सकता । उन्होने अपने गायन से संपूर्ण जगत में भारत का नाम रोशन कीया है । अपनी गायन शैली से उन्होने महिलाओं के लिए सबलीकरणका एक उच्चतम उदाहरण सामने रखा है ।

संगीत एक ऐसा माध्यम है जिससे जीवन का हर अंग संगीत के रंग से भरा है। और संगीत के बिना जीवन व्यतित करना असंभव है ।भारतीय महिला गायिकाओं ने भारतीय संगीत को बहुत बडा योगदान देकर विश्व के सामने भारतीय संगीत के प्रति समर्पित जीवन का निचोड अपने अथक परीश्रम ध्येयासक्ती लगन से अजरामर और अविस्मरणीय किया है ।

संदर्भग्रंथ :

१. संगीत विशारद - वसंत
२. भारतीय संगीत का इतिहास - उमेश जोशी
३. नाट्यशास्त्र - पं.भरतमूनी
४. संगीत कला विहार - गांधर्व महामंडळ
५. संगीत निबंधावली - किरण फाटक
६. संगीतशास्त्र परिचय - मोहना मार्डीकर
७. संगीत और सौंदर्यशास्त्र - डॉ. सुलभा ठाकर
८. भारतीय संगीत का इतिहास - डॉ.शरदचंद्र परांजपे
९. हमारे प्रिय संगीतज्ञ - हरिशचंद्र श्रीवास्तव
१०.नारी कलाकार - आशाराणी व्होरा

PRINCIPAL
Govt. College of Arts & Science
Aurangabad